दीक्षा

मन्त्र कोना अँटाबी

लेखक

पं० माधव झा
विद्यावाचस्पति (पी०एच०डी०), व्याकरणाचार्य, ज्योतिर्विद्
भूतपूर्व प्रधानाचार्य, नन्दन संस्कृत महाविद्यालय,
इसहपुर-रामनगर, पो० सनकोर्थु, जिला मधुबनी

प्रकाशक

दीनबन्धुप्रकाशन
इसहपुर, पो० सनकोर्थु, जिला मधुबनी

प्रकाशक :
दीनबन्धु-प्रकाशन
इसहपुर, पो० सनकोर्थु, जिला मधुबनी

प्रथम प्रकाशन–१९९६

मूल्य ८ टाका

प्राप्तिस्थान :

(१) श्री भुवन झा, इसहपुर- रामनगर, डा० सनकोर्थु
जिला मधुबनी, बिहार ८४७४२४

(२) डॉ अरविन्द कुमार 'अक्कू'
९, पूर्वी पटेलनगर, पटना-८०००२३

मुद्रकः क्रियेटिभ प्रिन्टर्स, उत्तरी मंदिरी, पटना-८००००१

एहि पोथीक प्रसङ्ग

हमरालोकनिक धार्मिक समाजमे सम्प्रति मुख्य रूपेँ तीन गोट सम्प्रदाय सङ्ग-सङ्ग चलि रहल अछि– वैदिक, पौराणिक आ तान्त्रिक । वैदिक सम्प्रदायमे हमरालोकनि उपनयनमे गुरुसँ वैदिक मन्त्र लैत छी । पौराणिक सम्प्रदायक अनुसार राम, कृष्ण वा शिवक मन्त्र स्वयं चुनि जपैत रहैत छी । तान्त्रिक सम्प्रदायमे सेहो उपनयनहि जकाँ तान्त्रिक मन्त्र गुरुसँ लैत छी । तान्त्रिक मन्त्र लेबाक ई विधि **दीक्षा** कहबैत अछि । इएह थिक प्रस्तुत पोथीक विषय, तेँ उचिते एकर नाम **दीक्षा** राखल गेल अछि ।

जेना वैदिक सम्प्रदायमे गुरुसँ मन्त्र लेब परम आवश्यक, तहिना तान्त्रिक सम्प्रदायहुमे मन्त्र लेब परम आवश्यक मानल जाइत अछि । परन्तु दूनू सम्प्रदायमे एक बातक भेद अछि । वैदिक सम्प्रदायमे सभ मन्त्र सभक हेतु हितकर बूझल जाइत अछि, मुदा तान्त्रिक सम्प्रदायमे ई विवेचन करए पड़ैत छैक जे कोन तान्त्रिक मन्त्र कोन व्यक्तिक हेतु कतेक हितकर वा कतेक अहितकर होएत । एही विवेचनक नाम थिक **मन्त्र अँटाएब** आ तकरे विधि एहि पोथीमे देल गेल अछि ।

मन्त्र अँटाएब सोझ नहि अछि । एखन धरि ई काज पण्डितसँ कराओल जाइत रहल अछि । पण्डितलोकनि संस्कृत भाषामे लिखल पोथी देखि-देखि मन्त्र अँटबैत अएलाह अछि । परन्तु आब एहन-एहन विषयक ज्ञाता पण्डित दुर्लभ भेल जाए रहल छथि । लगैत अछि जे किछु दिन मे पण्डित कतहु भेटबे नहि करथि । परन्तु तेँ धर्मकर्मक लोप नहि होएत । पढ़ल-लिखल लोक पण्डित-पुरोहित पर निर्भर नहि रहि स्वयं पोथी पढ़ि-पढ़ि अपन धार्मिक अनुष्ठान कए लेताह । परन्तु ताहिमे किछु कठिनता अछि । एक तँ धर्मानुष्ठानसम्बन्धी पोथी केवल संस्कृत भाषामे अछि, आ दोसर ओ पोथीसभ तेहन कठिन अछि जे संस्कृत भाषा सिखिओ लेला पर ओकर अर्थ बूझब सोझ नहि अछि ।

एही कठिनतासभकेँ दूर करबाक उद्देश्यसँ पण्डित श्री माधव झा सर्वसाधारण लोकक भाषा मैथिलीमे **दीक्षा** नामक ई पोथी लिखलनि अछि जे साधारणो पढ़ल-लिखल लोक एहि पोथीक सहायता सँ मन्त्र अँटाएब जानि जाए । लेखक बड़ परिश्रम आ अपन विशिष्ट प्रतिभाक बलेँ एहि पोथीकेँ सरलसँ सरल बनएबाक प्रयास कएलनि अछि आ हमरा जनैत ताहिमे पूर्ण सफल भेलाह अछि ।

एहि पोथीक लेखक पण्डित श्री माधव झा प्रकाण्ड पण्डित छथि, परम नैष्ठिक छथि आ अपन आदर्श आचार-विचारसँ समाजमे परम आदृत छथि ।

आशा जे मैथिली भाषामे पहिले बेर लिखल गेल मन्त्र अँटएबाक ई पोथी समाजमे चिर काल धरि ओहने आदर पबैत रहत जेहन आदर एकर विद्वान् आ आचारवान् लेखक पण्डित श्री माधव झा पाबि रहल छथि ।

पं० श्री कृपाकान्त ठाकुर
लोहना (मधुबनी)

ज्ञातव्य विषय

दीक्षा तथा दीक्षा लेबाक आवश्यकता आदि

शास्त्रोक्त-विधानसँ गुरुक द्वारा बीजमन्त्रक उपदेश दीक्षा कहबैछ । विनु दीक्षा लेने यज्ञकर्मक अधिकार नहि होइछ । ततबे नहि, अदीक्षित-जनकृत पूजा देवतालोकनि तथा श्राद्ध पितरलोकनि ग्रहण नहि करैत छथि । परिणामस्वरूप ओहि जनक जीवन भरिक सभ कर्म व्यर्थ भए जाइछ । अन्तमे ओजन महान् दु:ख भोगैत छथि । ई विषय यामलतन्त्रादि ग्रन्थमे वर्णित अछि । अत: उपनयनक बाद प्रत्येक सुखेच्छु जनकेँ यथासम्भव शीघ्र दीक्षा लेब आवश्यक थिक ।

इष्ट मन्त्रक जप दस लाखसँ अधिके कएला पर पूर्णतया फल होइछ । तँ एकाक्षर, द्व्यक्षर तथा त्र्यक्षर मात्र बीज-मन्त्रक उपदेश देबाक परम्परा अछि ।

तीन अक्षर तकक मन्त्रक संख्या यथोपलब्ध २० अछि । एहि २० मन्त्र मध्य नामानुसार सर्वाधिक अनुकूल बीज-मन्त्रक चयन करब मन्त्र अँटाएब कहबैछ ।

कोनो नामक अनुकूल इष्ट मन्त्रक चयनमे सात चक्रक आधार पर विचार करए पड़ैछ। एहिमे पूर्ण समय तथा श्रम अपेक्षित छैक ।

किन्तु एहि पुस्तकक साहाय्यसँ बिनु श्रमे एक -दूइ मिनटक भितरे सर्वाधिक अनुकूल इष्ट मन्त्र केओ अवगत कए सकैत छथि आओर स्वयं मन्त्र अँटाएब अल्पायासेँ सीखि सकैत छथि ।

नामक अनुसार इष्ट मन्त्रक चयन होइछ। ताहिमे उत्तम थिक राशिक नामक अनुसार। से यदि ज्ञात नहि भए सकए तँ प्रसिद्ध नामक अनुसार विचार करबाक थिक ।

मन्त्रोपदेश किनकासँ ली ?

शक्तिक मन्त्र स्त्रीजनसँ लेब प्रशस्त मानल गेल अछि । अत: सर्वप्रथम माता, तत: विमाता, पितामही, पितिआइन, माउसि, पीसि तथा मातामही आदिसँ मन्त्र ली ।

यदि गुरुयोग्य स्त्रीजन उपलब्ध नहि होथि तँ पुरुषहुसँ मन्त्र ली । पुरुषमे पितासँ, मातामहसँ तथा छोट भाएसँ मन्त्र नहि ली । एहिसँ अन्य यथा-पित्ती, जेठ भाए आदि सँ मन्त्र ली ।

सँन्यासी तथा अन्यधर्मावलम्बीसँ मन्त्र नहि ली ।

स्वामी जनिकासँ मन्त्र लेथि तनिकहिसँ हुनक स्त्री मन्त्र लेथि । त्रिपुरारहस्यमे ई विषय वर्णित अछि । वेदमे पत्नीकेँ वामाङ्ग कहल गेल अछि; अत: पति-पत्नी दुनू गोटए एके गोटएसँ मन्त्र लेथि, भिन्न जनसँ नहि ।

यदि संयोगवश, असंशोधित अनिष्ट बीजमन्त्रक उपदेश लेल जाए तथा बादमे ओहि-मन्त्रकेँ त्यागि दोसर इष्ट मन्त्रक ग्रहण करबाक होए तँ ओही गुरुक अनुमतिसँ दोसर इष्ट मन्त्रक उपदेश हुनकहिसँ लेल जाए सकैछ, अन्यसँ नहि । यदि ओ गुरु स्वर्गवासी भए गेल रहथि तँ अनकहुसँ मन्त्र लेबाक थिक । इहो विषय त्रिपुरारहस्यमे उक्त अछि।

आओर इहो विषय ततहि लिखल अछि जे स्वप्नलब्ध मन्त्र बिना गुरुऔक ग्रहण करबाक थिक । तकर विधान ई लिखल अछि जे एक कलश पर गुरुक प्राण-प्रतिष्ठा कए बड़क पातपर कुङ्कुमसँ मन्त्र लिखि ग्रहण करी ।

मन्त्रोपदेश लेबाक समय

प्रतिवर्ष, आश्विन, माघ, चैत्र तथा आषाढ़ एहि चारू मासक शुक्ल पक्षक पड़िबसँ नवमी पर्यन्त नवरात्र कहबैछ । एहि चारू नवरात्रक महाष्टमी तथा महानवमीक दिन मन्त्र ली । एहि चारू नवरात्रमे आश्विन मासक नवरात्र शास्त्रमे प्रशस्त मानल गेल अछि, अतएव मिथिलामे एही नवरात्रमे भगवतीक आराधनाक विशेष प्रचार अछि ।

सुखरात्रि, शिवरात्रि तथा कृष्णाष्टमीक दिन (जे क्रमशः कालरात्रि, महारात्रि तथा मोहरात्रि कहबैछ), आओर सूर्यग्रहणक दिन मन्त्रोपदेश ग्रहण करबाक थिक । चन्द्रग्रहण दिन नहि ।

एहिसँ अतिरिक्तो समयमे दिन तकबाए मन्त्रोपदेश लेल जाए सकैछ । मन्त्रोपदेश लेबामे शुद्ध समय विहित अछि । अशुद्ध समयमे मन्त्र नहि ली । मासमे– चैत, जेठ, भादव तथा पूस ई चारि मास छोड़ि अन्य आठो मास विहित अछि । तिथिमे– द्वितीया, तृतीया, पंचमी, सप्तमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी तथा त्रयोदशी ई आठ तिथि विहित अछि । नक्षत्रमे– चित्रा, मृगशिरा, हस्त, उत्तरफल्गुनी, मूल, उत्तराषाढ, उत्तरभाद्र, अनुराधा, रेवती तथा धनिष्ठा विहित अछि । दिनमे– रवि, सोम, बुध, बृहस्पति तथा शुक्र विहित अछि, अन्य नहि । लग्नमे– मेष, तुला, धनु, कुम्भ, मीन तथा कन्या मात्र विहित अछि।

संक्षिप्त मन्त्रोपदेश ग्रहणविधि

शिष्य तथा गुरु पूर्व दिन एकभुक्तादि संयम करथि । मन्त्र-ग्रहण दिन प्रातः नित्यकर्म कए गाइक गोबरसँ नीपल पवित्र भूमिपर शिष्य तथा गुरु [illegible]ाभिमुख भए हाथ-पाएर धाए अपन-अपन आसनपर पूर्वाभिमुख गुरु तथा उत्तराभिमुख शिष्य बैसथि ।

शिष्य तेकुशा-तिल-जल हाथमे लए संकल्प करथि– **ओं अद्य/नमोद्य[1], अमुक मासीय, अमुक पक्षीय, अमुक तिथौ अमुक गोत्रस्य/अमुक गोत्रायाः[1] मम श्री अमुक शर्मणः/अमुक देव्याः[1] पूर्वजन्मोपार्जित सकलपापक्षयपूर्वक विमल बुद्धि पुत्र-पौत्र-धन कल्याण-नाना विध**

1. जँ महिला मंत्र लथि।

कवित्व सर्वशास्त्रबोध सुख-सौमनस्य प्राप्तिकामनया अमुकदेवतायाः **एकाक्षर/द्वयक्षर/त्र्यक्षर-मन्त्रग्रहणमहं करिष्ये ।** ई पढ़ि तिल-जल त्याग करथि । ततः पर शिष्य एक डाली पर वस्त्र, फल, फूल, चानन पान-सुपारी, नारिकेर तथा नगद दए, दुनू हाथेँ डाली उठाए, मनहि-मन गुरुकेँ वरण कए गुरुक चरण पर समर्पित करथि। तखन गुरु तथा शिष्य नव वस्त्र पहिरि अपन-अपन आसन पर पूर्ववत् बैसथि ।

तखन गुरु मन्त्रक देवताक (जे मन्त्र गुरुक द्वारा शिष्यकं कानमे देल जएतैन्हि ताहि मन्त्रक देवताक) पञ्चोपचार पूजा कए शङ्खमे अक्षत तथा जल दए शङ्खक पूजा करथि (शङ्खाय नमः एहि शब्देँ फूल चानन आदिसँ) ।

तखन गुरु ओहि शङ्खसँ जल लए शिष्यकेँ हेतु अँटाओल बीज-मन्त्र पढ़ि शिष्यक माथ पर छीटथि । एना आठ बेरि करथि । ततः शिष्यक माथ पर हाथ दए आठ बेरि शिष्यक कानमे (पुरुषक दहिन तथा स्त्रीक वाम कानमे) मन्त्र पढ़थि ।

तखन शिष्य दुनू हाथेँ गुरुकेँ प्रणाम कए आठ बेरि ओहि मन्त्रक जप करथि । ओहि मन्त्रक देवताक पूजा कए गुरुकेँ पुनः प्रणाम करथि । ततःपर शिष्य तेकुशा-तिल-जल लए गुरुक हेतु दक्षिणा दान करथि– **ओं अद्य/नमोद्य[1] कृतैतत अमुक देवतायाः अमुक मन्त्रग्रहणकर्मप्रतिष्ठार्थम् एतावद्/एतद् द्रव्यमूल्यकहिरण्यमग्निदैवतं अमुक गोत्राय/अमुक गोत्रायै[2] अमुक शर्मणे/देव्यै[2] गुरवे दक्षिणान्तुभ्यमहं सम्प्रददे-ई** पढ़ि गुरुक हाथमे दक्षिणा देथि। गुरु "स्वस्ति" कहथि ।

ततःपर शिष्य गुरुक पाएर पर दण्डवत् पड़ि रहथि । तखन गुरु पढ़थि– 2

1 1

पढ़ि शिष्यकेँ उठाबथि । ततःपर शिष्य उठि यथाशक्ति कुमारि-भोजन तथा ब्राह्मण-भोजन कराबथि तथा भोजन-दक्षिणा देथि ।

मन्त्र कोना अँटाबी

सर्वाधिक अनुकूल इष्ट मन्त्र चयन करबाक मार्ग दूइ गोट प्रदर्शित अछि । ऐक सारिणीक द्वारा तथा दोसर सात चक्रक आधार पर विचार-विमर्शक द्वारा । विनु श्रमेँ अल्पसँ अल्प समयमे सारिणीक द्वारा इष्ट मन्त्रक चयन होएत । आओर विचार-विमर्शक द्वारा, किछु श्रम तथा अधिक समय लगलापर इष्ट मन्त्रक चयन होएत ।

यद्यपि उक्त दुनू मार्गसँ मन्त्र चयनमे अन्तर नहि पड़त, दुनूसँ समाने मन्त्र निर्धारित होएत, तथापि श्रम तथा अधिक समयसाध्य दोसर मार्ग जे देल गेल अछि से "मन्त्र कोना अँटाओल जाइछ" एहि विषयक जिज्ञासु जनक हेतु । आओर जनिका नामक सर्वाधिक

1. जँ महिला मन्त्र लेथि । 2. जँ महिला गुरु होथि ।

अनुकूल इष्ट मन्त्र मात्रक जिज्ञासा रहैन्हि तनिका हेतु प्रथम मार्ग । आओर सारिणी शुद्ध अछि वा अशुद्ध अछि एहि विषयक सन्देह दूर करबाक हेतु एवं सारिणी पर आस्था-विश्वास तथा श्रद्धा उत्पन्न करबाक हेतु द्वितीय मार्ग प्रदर्शनक आवश्यकता बुझल गेल।

प्रथम चक्र

दुनू मार्गँ मुन्त्रक चयनमे नामाङ्क -निर्धारण-विधि समाने अछि । अन्तर एतबे जे नामगत प्रत्येक वर्णक अङ्क तथा मन्त्रगत प्रत्येक अक्षरक अङ्क भिन्न-भिन्न अछि, आओर अन्य सभ प्रक्रिया समाने ।

नाम अनन्त अछि, अतः नामाङ्को अनन्त होएत, अतएव सब नाम तथा नामाङ्क निर्धारित कए लिखब सम्भव नहि ।

बीज-मन्त्र बड़ थोड़, तँए, प्रत्येक बीज-मन्त्र तथा तकर आगाँ मन्त्रगत प्रत्येक वर्ण तथा तकर नीचा चक्रानुसार प्रत्येक वर्णक अङ्क, तकर आगाँ वर्णाङ्कक योग तथा आठसँ भाग दए शेष अङ्क जे मन्त्राङ्क कहबैछ, सुविधाक हेतु लिखित अछि। सारिणी (पृष्ठ 10 पर) देखू । एवं मन्त्र, मन्त्राङ्क, देवता तथा मन्त्राङ्क-निर्धारण-प्रक्रिया सेहो उक्त सारिणी सँ अवगत करी ।

नामगत तथा मन्त्रगत वर्णक अङ्कबोधक एक चक्र छैक जे 'ऋणधन चक्र' कहबैछ । तकरा दूइ चक्र बनाए (नामगत वर्णक अङ्कबोधक चक्र १, तथा मन्त्रगत वर्णक अङ्क बोधक चक्र २) एहिमे देल जाइत अछि [देखू प्रथम चक्र (क) तथा प्रथम चक्र (ख)]

प्रथम चक्र (क)

नामाङ्क-निर्धारण हेतु नामगत वर्णक अङ्कबोधक चक्र

ऋण-धन-चक्रानुकूल

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	
२	२	२	२	५	५	×	×	×	×	२	१	×	४	४	१	
क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ
२	२	५	×	×	२	१	×	४	४	१	२	२	५	×	×	२
द	ध	न	प	फ	ब	भ	म		य	र	ल	व	श	ष	स	ह
१	×	४	४	१	२	२	५		×	×	२	१	×	४	४	१

एहि चक्रमे वर्णमालाक क्रमसँ वर्णक विन्यास अछि । जाहि वर्णक जे अङ्क होइछ, से ताहि वर्णक नीचा लिखल गेल अछि तथा जाहि वर्णक अङ्क शून्य होइछ तकरा नीचाँ × एहिरूपक चिह्न देल गेल अछि । क्ष वर्ण (क् + ष् + अ = क्ष) ककारादि थिक, त्र (त् + र + अ = त्र) वर्ण तकारादि थिक तथा ज्ञ वर्ण जकारादि (ज् + ञ् + अ = ज्ञ) थिक । अतः चक्रमे ई तीनू वर्ण नहि देल गेल । अं सँ अनुस्वार तथा अः सँ विसर्ग ज्ञातव्य

थिक । ऋ, ॠ, लृ, लॄ, आं एहि पाँच स्वरवर्णक तथा घ्, ङ्, ज्, ण्, त्, ध्, य्, ऱ्, श् एहि नवो व्यञ्जनक अङ्क शून्य होइछ ।

जाहि व्यक्तिक हेतु इष्ट मन्त्र बुझबाक हो ताहि व्यक्तिक पूरा नाम बूझि, नामक प्रत्येक स्वर-व्यञ्जनादि वर्ण पृथक्-पृथक् एक पंक्तिमे लिखी, तथा ओहि वर्ण समक नीचा उक्त चक्रानुसार अङ्क लिखी, तखन ओहि अङ्क सभक योग कए योगफलमे आठ सँ भाग दी, शेष अङ्क जे होए तकरा नामाङ्क बुझी ।

उदाहरण– भगवान एहि नामक प्रत्येक वर्ण एहि प्रकारेँ लिखल– भ् अ, ग् अ, व् आ, न् अ । (भगवानमे ४ स्वर तथा ४ व्यञ्जन, मिलाए ८ वर्ण भेल), एहि आठो वर्णक नीचाँ उक्त चक्रानुसार क्रमशः २, २, ५, २, १, २, ४, २ अङ्क लिखल। ओहि अङ्क सभक योग कएला पर २० भेल तथा एहि योगफल २० केँ ८ सँ भाग देला पर (२० ÷ ८) शेष भेल ४, तेँ इएह ४ नामाङ्क भेल ।

दोसर उदाहरण– कृष्णा मे क् ऋ, ष्, ण्, आ पाँच वर्ण भेल, पाँचोक नीचाँ उक्त चक्रानुसार क्रमशः २ × ४ × २ अङ्क लिखल । एकर योग आठ भेल; ताहिमे आठसँ भाग देला पर शेष शून्य होए, जे ८ मानल जाइछ; अतः कृष्णाक नामाङ्क ८ भेल (अथवा ० भेल) ।

तेसर उदाहरण– ओंकारनाथ । ओ अनु क् आ र अ न् आ थ् ञ

× + ४ + २ + २ + × + २ + ४ + २ + २ + २

= २०; २० ÷ ८, शेष ४ हो । अतः नामाङ्क ४ सिद्ध भेल ।

चारिम उदाहरण– ज्ञाननाथ = ज् ञ् आ न् अ न् आ थ अ

× ४ २ ४ २ ४ २ २ २

= २२; २२÷ ८, शेष ६ । अतः नामाङ्क ६।

प्रथम चक्र (ख)

मन्त्राङ्क निर्धारण हेतु मन्त्रगत वर्णक अङ्कबोधक चक्र

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः		
६	६	६	६	६	६	×	×	३	३	४	४	×	×	×	३		
क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट	ठ	ड	ढ	ण	–		
६	६	६	×	३	४	४	×	×	×	३	६	६	६	×			
त	थ	द	ध	न	प	फ	ब	भ	म	य	र	ल	व	श	ष	स	ह
३	४	४	×	×	×	३	६	६	६	×	३	४	४	×	×	×	३

टिप्पणी १ : अं सँ अनुस्वार ओ अः सँ विसर्ग बुझल जाइछ ।

टिप्पणी २ : क्ष त्र ज्ञ तीनू क्रमशः क् + ष्, त् + र तथा ज् + ञ् संयुक्ताक्षर थिक, तेँ चक्रमे नहि आएल अछि ।

मन्त्राङ्क - निर्धारणो ओहिना होइत अछि जेना नामाङ्क - निर्धारण । एहिमे केवल मन्त्रगत वर्ण सभक अङ्क भिन्न अछि ।

विशेष सुविधाक हेतु नीचाँ एक सारिणी देल जाइत अछि जाहिमे यथोपलब्ध व्यवहार्य एवं व्यवहृत सकल बीजमन्त्र, ओकर देवता, वर्ण, वर्णाङ्क निकालबाक विधि आ वर्णाङ्क

दए देल गेल अछि ।

मन्त्र-मन्त्राङ्क-देवता बोधक सारिणी

बीज मन्त्र	मन्त्राङ्क	देवता	साधन-प्रक्रिया		
			मन्त्रक वर्ण	वर्णक अङ्क आ गणित क्रिया	शेष मन्त्राङ्क
आँ हुँ	७	छिन्नमस्ता	आँ ह उँ	६ + ० + ३ + ६ + ० = १५÷८	७
ऐँ	४	बाला	ऐँ	४ + ० = ४÷८	४
ऐँ दुँ	६	दुर्गा	ऐँ द उँ	४ + ० + ४ + ६ + ० = १४÷८	६
ऐँ क्रीँ ऐँ	७	काली	ऐँ क रँ ऐँ	४ + ० + ६ + ३ + ६ + ० + ४ + ० = २३ ÷ ८	७
क्रीँ	७	काली	क र ईँ	६ + ३ + ६ + ० = १५÷८	७
दुँ	२	दुर्गा	द उँ	४ + ६ + ० = १०÷८	२
श्रीँ	१	लक्ष्मी	श र ईँ	० + ३ + ६ + ० = ९÷१०	१
श्रीँ क्रीँ	८	काली	श र ईँ क र ईँ	० + ३ + ६ + ० + ६ + ३ + ६ + ० = २४÷८	८
श्रीँ दुँ	३	दुर्गा	श र ईँ द उँ	० + ३ + ६ + ० + ४ + ० + ६ = १९ ÷८	३
श्रीँ स्त्रीँ श्रीँ	६	तारा	श र ईँ स त र ईँ श रँ	० + ३ + ६ + ० + ० + ३ + ३ + ६ + ० + ० + ३ + ६ + ० = ३१÷८	६
स्त्रीँ	४	भुवनेश्वरी	स त र ईँ	० + ३ + ३ + ६ + ० = १२÷८	४
स्त्रीँ दुँ	६	दुर्गा	स त र ईँ द उँ	० + ३ + ३ + ६ + ० + ४ + ६ + ० = २२÷८	६
ह्रीँ	४	भुवनेश्वरी	ह र ईँ	३ + ३ + ६ + ० = १२÷८	४
ह्रीँ ऐँ	८	बाला	ह र ईँ ऐँ	३ + ३ + ६ + ० = १२÷८	८
ह्रीँ क्रीँ	३	काली	ह र ईँ क र ईँ	३ + ३ + ६ + ६ + ३ + ६ + ० = २७ ÷८	३
ह्रीँ क्रीँ ह्रीँ	७	,,	ह र ईँ क र ईँ	३ + ३ + ६ + ० + ६ + ३ + ६ + ० + ३ + ३ + ६ + ० = ३९÷८	७
ह्रीँ दुँ	६	दुर्गा	ह र ईँ द उँ	३ + ३ + ६ + ० + ४ + ६ + ० = २२÷८	६
ह्रीँ श्रीँ	५	लक्ष्मी	ह र ईँ श र ईँ	३ + ३ + ६ + ० + ० + ६ + ० = १८÷८	२
ह्रीँ स्त्रीँ	८	तारा	ह र ईँ स त र ईँ	३ + ३ + ६ + ० + ० + ३ + ३ + [illegible] + ० = २४÷८	८
श्रीँ ह्रीँ	५	भुवनेश्वरी	श र ईँ ह र ईँ	० + ३ + ६ + ० + ३ + ३ + ६ + ० = २१÷८	५

नामाङ्क तथा मन्त्राङ्क निर्धारणक द्वितीय विधि

पूर्वोक्त विधिसँ निर्धारित नामाङ्ककेँ द्विगुण करी । ताहिमे पूर्वोक्त विधिसँ निर्धारित मन्त्राङ्ककेँ जोड़ि ८ सँ भाग दी, शेष अङ्क नामाङ्क होए ।

एहिना पूर्वोक्त विधिसँ निर्धारित मन्त्राङ्ककेँ द्विगुण कए ओहिमे पूर्वोक्त विधिसँ निर्धारित नामाङ्क जोड़ि ८ सँ भाग दी, शेष अङ्क मन्त्राङ्क होए । उक्त कोनहु विधिसँ नामाङ्कसँ अल्प मन्त्राङ्कक मन्त्र ग्राह्य नहि ।

एहि द्वितीय विधिक आवश्यकता

पूर्वमे कहि चुकल छी जे नामगत वर्णाङ्कयोगक आओर मन्त्रगत वर्णाङ्कयोगक अष्ट-भक्त शेषाङ्क नामाङ्क तथा मन्त्राङ्क होइछ । अतः नामाङ्क तथा मन्त्राङ्क सातसँ अधिक नहि भए सकैछ, आओर '०' भए सकैछ जे आठ मानल जाइछ । तँ ८ सँ अधिक नामाङ्क तथा मन्त्राङ्क भइए नहि सकैछ । आओर नारद पुराणमे कहल अछि जे ० (शून्य) मन्त्राङ्कक मन्त्र ग्रहण नहि करी । तथा नामाङ्कसँ अधिके अथवा तुल्य मन्त्राङ्कक मन्त्र ग्रहण करी, किन्तु नामाङ्कसँ अल्प मन्त्राङ्कक मन्त्र ग्रहण नहि करी ।

एहि स्थितिमे ८ नामाङ्कक नामक हेतु इष्ट मन्त्र एहि द्वितीय विधिक अवलम्बनसँ उपपन्न होइछ, प्रथम विधिसँ नहि ।

यथा– 'कृष्णा' एहि नामक नामाङ्क (प्रथम विधिसँ) ० वा ८ होएत । आओर ७ सँ अधिक मन्त्राङ्कक मन्त्र नहि अछि (८ मन्त्राङ्कक मन्त्र ० (शून्य) रूपमे होएबाक कारणे निषिद्ध) । अतः एहि नामक हेतु इष्ट मन्त्रक उपपत्ति नहि होएत । अतः द्वितीय विधिक आवश्यकता ।

एहि द्वितीय विधिसँ एहि नामक हेतु "ह्रीँ क्रीँ" इष्ट मन्त्र होएत । यथा प्रथम विधिसँ निर्धारित कृष्णा एहि नामक नामाङ्क ८ केँ द्विगुण कएल तँ ८ + ८ = १६ भेल। एहिमे प्रथम विधिसँ निर्धारित ह्रीँ क्रीँ एहि मन्त्रक (४ + ७ = ११ ÷ ८ = शेष ३) मन्त्राङ्क ३ जोड़ल, तँ १६ + ३ = १९ भेल; एहिमे ८ सँ भाग देला पर शेष अङ्क ३ बचल जे नामाङ्क भेल ।

एहिना ह्रीँ एकर मन्त्राङ्क ४, तथा क्रीँ एकर मन्त्राङ्क ७; दुनूकेँ जोड़ल तँ ११ भेल । तकरा द्विगुण कएल तँ २२ भेल । एहिमे ८ जोड़ल तँ ३० भेल । एहिमे ८ सँ भाग देला पर शेष अङ्क ६ बचल जे मन्त्राङ्क भेल । नामाङ्कसँ मन्त्राङ्क अधिक भेल तँ ह्रीँ क्रीँ ई मन्त्र कृष्णा एहि नामक इष्ट भेल ।

८ नामाङ्कक व्यक्तिक हेतु द्वितीय विधिसँ इष्ट मन्त्र उपपन्न होएत ।

द्वितीय चक्र

पूर्वमे कहि चुकल छी जे सात चक्रक आधार पर विचार-विमर्श कए सर्वाधिक अनुकूल इष्ट मन्त्रक चयन कएल जाइछ। ओहि सातो चक्रमे कुलाकुल-चक्रक आधार पर तत्वानुसार नामक आदि वर्ण तथा मन्त्रक आदि वर्णक अनुकूलताक विचार कएल जाइत अछि।

एहि चक्रमे वर्णसभक पाँच विभाग कएल गेल अछि– वायुतत्त्व, अग्नितत्त्व, पृथ्वीतत्त्व, जलतत्त्व आ आकाशतत्त्व। कोन वर्ण कोन तत्त्व थिक से निम्नलिखित कोष्ठसँ ज्ञात होएत :

कुलाकुल-चक्र (अर्थात् बन्धु-शत्रु-सम चक्र)

वायुतत्त्व	अ	आ	ए	क	च	ट	त	प	य	ष
अग्नितत्त्व	इ	ई	ऐ	ख	छ	ठ	थ	फ	र	क्ष
पृथ्वीतत्त्व	उ	ऊ	ओ	ग	ज	ड	द	ब	ल	ळ
जलतत्त्व	ऋ	ॠ	औ	घ	झ	ढ	ध	भ	व	स
आकाशतत्त्व	ऌ	ॡ	अं	ङ	ञ	ण	न	म	श	ह

टिप्पणी– एहि चक्रमे त्र तथा ज्ञ नहि अछि। अतः एहि दूनू वर्णकेँ क्रमशः तकरादि तथा जकारादि मानि विचार कर्तव्य।

एहि चक्रमेवर्ण विन्यास क्रम आगमकल्पद्रुमक–

वाय्वग्निभूजलाकाशाः पञ्चाशल्लिपयः क्रमात्।
पञ्च ह्रस्वाः पञ्च दीर्घा बिन्द्वन्ताः सन्धिसम्भवाः॥
कादयः पञ्च शः ष-क्ष-क-स-हान्ता उदीरिताः।

एहि वचनक अनुसार लिखित अछि। एहि चक्रक आधार पर नामक आदि अक्षरकेँ मन्त्रक आदि अक्षरक सङ्ग अनुकूलता-प्रतिकूलताक विचार तत्त्वानुसार कएल जाइत अछि। चक्र देखि प्रथमतः ई ज्ञात करी जे नामक आदि अक्षर कोन तत्त्व थिक आ मन्त्रक आदि अक्षर कोन तत्त्व। तखन ई देखी जे दूनू तत्त्वमे मित्रता छैक, कि शत्रुता, आकि समता। जँ शत्रुता रहैक तँ ओ मन्त्र अनुकूल नहि बूझी, मित्रता वा समता रहैक तँ ओहि मन्त्रकेँ अनुकूल बूझी। कोन तत्त्व कोन तत्त्वक शत्रु, मित्र वा सम से निम्नलिखित सारणीमे देखू :

	वायु	अग्नि	पृथ्वी	जल	आकाश
वायु	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	सम
अग्नि	मित्र	सम	शत्रु	शत्रु	सम
पृथ्वी	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम
जल	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम
आकाश	सम	सम	सम	सम	सम

सारणी सँ स्पष्ट होएत जे वायु आ अग्निमे, पृथ्वी आ जलमे तथा जल आ वायुमे मित्रता छैक। एहिना वायु आ पृथ्वीमे, वायु आ जलमे, अग्नि आ पृथ्वीमे तथा अग्नि

आ जलम शत्रुता छेक । एहि शत्रुताक आ मित्रताक प्राकृतिक कारण अछि जे नीचाँ देखाओल जाइत अछि :–

(१) वायु अग्निकेँ प्रज्वलित करैछ तथा अग्नि वायुकेँ स्वगुण उष्णता प्रदान करैछ, अत: दूनूमे मित्रता ।

(२) पृथ्वी जलकेँ स्वगुण गन्धादि दैत अछि तथा जल पृथ्वीकेँ उर्वरताशक्ति तथा संसक्तताशक्ति दैत अछि अत: दूनूमे मित्रता ।

(३) आकाशकेँ कोनो तत्त्वक सङ्ग ने विरोध छैक, ने मैत्री; आ ई सभक सङ्ग समान भाव रखैत सभकेँ आश्रय दैछ, तेँ एकरा सभक सङ्ग समता ।

(४) पृथ्वीक मित्र जल वायुक मित्र अग्निकेँ नष्ट करैछ । अत: मित्रक शत्रु होएवाक कारणेँ वायु आ पृथ्वीमे शत्रुता ।

(५) वायु पृथ्वीकेँ क्षतिग्रस्त करैछतेँ वायुआ पृथ्वीमे शत्रुता ।

(६) वायुक मित्र अग्नि जलक मित्र पृथ्वीकेँ जरबैछ, तेँ मित्रक शत्रु होएबाक कारणेँ जल आ वायुमे शत्रुता ।

(७) अग्नि पृथ्वीकेँ जरबैछ, तेँ अग्नि आ पृथ्वीमे शत्रुता ।

(८) जल अग्निक विनाश करैछ, तेँ जल आ अग्निमे शत्रुता ।

एतए ज्ञातव्य थिकजे जल, वायु, अग्नि आ आकाश एहिसँ अन्य जे वस्तु दृष्ट होइछ से सभ वस्तु पृथ्वी कहबैछ । पृथ्वी से कहबैछ जाहिमे गन्ध रहैक । केवल जल, वायु, अग्नि तथा आकाशमे गन्ध नहि छैक; एहिसँ अन्य सभमे छैके । कोनो क्षण वायु लगलापर जे नीक अधलाह गन्धक अनुभव होइत अछि से वायुक द्वारा आनल रहैछ, वायुक अपन नहि ।

मन्त्रक आदि वर्ण आ तकर तत्त्व

मन्त्रक संख्या बड़ थोड़ अछि । अत: तकर आदि वर्ण आ तत्त्व सुविधार्थ एकत्र नीचाँ देखाओल जाइत अछि :–

मन्त्रक आदि वर्ण	आ	ऐ	क	द	श	स	ह
तत्त्व	वायु	अग्नि	वायु	पृथ्वी	आकाश	अग्नि	पृथ्वी

सम्बद्ध, किन्तु अनपेक्षित विचार दिसि गेलहु । आब प्रकृत विषयक विचार करी ।

पर्वूमे कहि चुकल छी– एहि चक्रक आधार पर तत्वानुसार नामक आदि अक्षरक अनुकूल अक्षरादि मन्त्रक चयन कएल जाइछ । यथा– गणेश नामक आदि वर्ण भेल ग, से पृथ्वीतत्त्व थिक । तथा क्रौँ एहि मन्त्रक आदि वर्ण भेल क, से वायुतत्त्व थिक । गणेश कँ ई मन्त्र अनुकूल नहि किएक तँ पृथ्वी-तत्व ओ वायुतत्वमे शत्रुता अछि । ह्रीँ ई मन्त्र अनुकूल होएतनि, किएक तँ ह आकाशतत्त्व थिक, जकरा पृथ्वीतत्त्वसँ समता छैक।

तत्वानुसार नामक अनुकूल मन्त्रक चयन

वायुतत्त्व तथा अग्नितत्त्वमे पारस्परिक मित्रता छैक, अत: जे वायुतत्त्वक प्रतिकूल होएत से अग्नितत्वोक तथा जे अग्नितत्त्वक प्रतिकूल होएत से वायु तत्वोक प्रतिकूल होएत ।

पृथ्वीतत्त्व तथा जलतत्त्वमे पारस्परिक मित्रता छैक, अत: पृथ्वीतत्त्वक प्रतिकूल जे

होएत सं जलतत्वीक प्रतिकूल तथा जलतत्त्वक प्रतिकूल जे होएत से पृथ्वीतत्वीक प्रतिकूल होएत ।

आकाशतत्त्वक संग अनुकूलता पतिकूलताक विचारं नहि, आकाशतत्त्वक हेतु सभ तत्त्व समाने तथा सभ तत्त्वक हेतु आकाशतत्त्व समाने ।

वायुतत्त्वक अक्षर– अ आ ए क च ट न प य तथा ष, (जे प्रथम कोष्ठमे अछि)।

अग्नितत्त्वक अक्षर– इ ई ऐ ख छ ठ थ फ र तथा क्ष । (जे. द्वि. कोष्ठमे अछि)।

उक्त दुनू तत्त्वक अक्षरसमुदाय मध्य यदि नामक आदि अक्षर पड़ए (अर्थात् यदि नामक आदि अक्षर वायुतत्त्वक अथवा अग्नितत्त्वक होए) तँ ताहि अक्षरक' प्रतिकूल पृथ्वी तत्त्वक तथा जल तत्त्वक अक्षर होइछ । जलतत्त्वक अक्षर मन्त्रक आदिमे नहि भेटैछ, अतः केवल पृथ्वीतत्त्वक द तथा ह ई दूनू प्रतिकूल होइक । अवशिष्ट पाँच अक्षर– (आ, ऐ, क, श तथा ह) अनुकूल । कहि चुकल छी जे मन्त्रक आदि अक्षर केवल सात अछि– आ ऐ क द श स ह । एतबे अक्षरादि मन्त्र उपलब्ध अछि ।

एहिना पृथ्वीतत्त्वक अक्षर थिक– उ ऊ ओ ग ज ड द ब ल तथा ह (देखू कोष्ठ ३)

जलतत्त्वक अक्षर थिक– ऋ ॠ औ झ ढ ध भ तथा व (देखू '' ४)। उक्त दूनू तत्त्वक अक्षरसमुदाय मध्य यदि नामक आदि अक्षर पड़ए (अर्थात् यदि नामक आदि अक्षर पृथ्वीतत्त्वक अथवा जलतत्त्वक होए) तँ ताहि अक्षरक वायुतत्त्वक तथा अग्नितत्त्वक अक्षर (ओ ऐ क) प्रतिकूल होइछ । अन्य ४ अक्षर (द श स ह) अनुकूल ।

तृतीय ओ चतुर्थ चक्र

गणबोधक चक्र

देवगणक अक्षर	– अ, आ, ए, ओ, औ, अं, अः, क, झ, ञ, ड, त, थ, द, म ।
राक्षस गणक अक्षर	– ई, उ, ऊ, ख, ग, घ, ङ, ट, ठ, ड, ढ, ण, ध, न, प, फ, य, र, ल ।
नरगणक अक्षर	– इ, ऋ, ॠ, ऌ, ॡ, ऐ, च, छ, ज, ब, भ, व, श, ष, स, ह ।

एहि अक्षरसँ अतिरिक्त तीनि अक्षर– क्ष, त्र तथा ज्ञ क्रमशः ककारादि, तकारादि तथा जकारादि मानल जाइछ । अतः क्ष देवगणक, त्र देवणक तथा ज्ञ नरगणक बुझल जाइछ । अथवा एहि अक्षरादि नामक हेतु गणविचार नहि कएल जाइछ । दुनू मार्ग अछि । देवगण तथा नरगणमे परस्पर मित्रता छैक । अतः देवगणान्तर्गत अक्षरादि नामक हेतु देवगणान्तर्गति अक्षरादि मन्त्र तथा नरगणान्तर्गत अक्षरादि मन्त्र इष्ट होए । एहिना नरगणान्तर्गत अक्षरादि नामक हेतु नरगणान्तर्गत अक्षरादि मन्त्र तथा देवगणान्तर्गत अक्षरादि मन्त्र इष्ट होए ।

मन्त्रादि अक्षर सात अछि	–	आ	ऐ	क	द	श	स	ह ।
तकर गण अछि	–	देव	नर	देव	देव	नर	नर	नर ।

राक्षसगण अक्षरादि मन्त्र नहि अछि । राक्षसगणक हेतु नरगण वर्णादि मन्त्र इष्ट होइछ । देवगणक मन्त्र थिक– क्रीँ ७, दुँ २, आँ हुँ ७, आदि । नरगणक मन्त्र थिक– ऐँ ४, श्रीँ १, स्त्रीँ ४, ह्रीँ ४, आदि ।

गणचक्रसहित नक्षत्र-चक्र

क्र.	वर्ण	नक्षत्र	गण	क्र.	वर्ण	नक्षत्र	गण	क्र.	वर्ण	नक्षत्र	गण
१.	अ आ	अश्विनी	देव	१०.	घ ङ	मघा	राक्षस	१९.	न प फ	मूल	राक्षस
२.	इ	भरणी	नर	११.	च	पूर्व फ.	नर	२०.	ब	पूर्वाषा	नर
३.	ई उ ऊ	कृत्तिका	राक्षस	१२.	छ ज	उत्तर फ.	नर	२१.	भ	उत्तराषा	नर
४.	ऌ ॡ ऋ	रोहिणी	नर	१३.	झ ञ	हस्त	देव	२२.	म	श्रवणा	देव
५.	ए	मृगशि	देव	१४.	ट ठ	चित्रा	राक्षस	२३.	य र	धनिष्ठा	राक्षस
६.	ऐ	आर्द्रा	नर	१५.	ड	स्वाती	देव	२४.	ल	शतभि.	राक्षस
७.	ओ औ	पुनर्वसु	देव	१६.	ढ ण	विशाखा	राक्षस	२५.	व श	पूर्वभाद्र	नर
८.	क	पुष्य	देव	१७.	त थ द	अनुरा.	देव	२६.	ष स ह	उ० भाद्र	नर
९.	ख ग	अश्ले	राक्षस	१८.	ध	ज्येष्ठा	राक्षस	२७.	अं अः क्ष	रेवती	देव

उक्त चक्रमे तृतीय कोष्ठमे अश्विनीसँ रेवती पर्यन्त क्रमशः २७ नक्षत्र, ताहिसँ पूर्व द्वितीय कोष्ठमे अकारादिक्रमँ वर्ण, तथा चतुर्थ कोष्ठमे गण लिखित अछि । त्र तथा ज्ञ ई दू अक्षर नहि अछि । त्र तकारादि तथा ज्ञ जकारादि थिक, क्रमशः देवगण तथा नरगणक । अथवा एहि दुनू अक्षरक विचार नहि कर्तव्य इहो भेटैत अछि । किन्तु तकारादि तथा जकारादि मानि विचार करब श्रेयस्कर थिक।

एहि चक्रसँ– यात्रामे ताराक विचार जकाँ– नामादि अक्षरकेँ मन्त्रक आदि अक्षरक संग विचार कएल जाइछ । यथा, नामक पहिल अक्षरक सम्मुख जे नक्षत्र लिखित होए ततएसँ मन्त्रक आदि अक्षर जतए हो तकर सम्मुख लिखित नक्षत्र पर्यन्त गणना करी । ओहिमे ९ सँ भाग दी । शेष अङ्क यदि १ होए तँ मध्यम, २, ४, ६, ८, ९ होए तँ उत्तम, तथा ३,५,७ होए तँ मन्त्र त्याज्य थिक ।

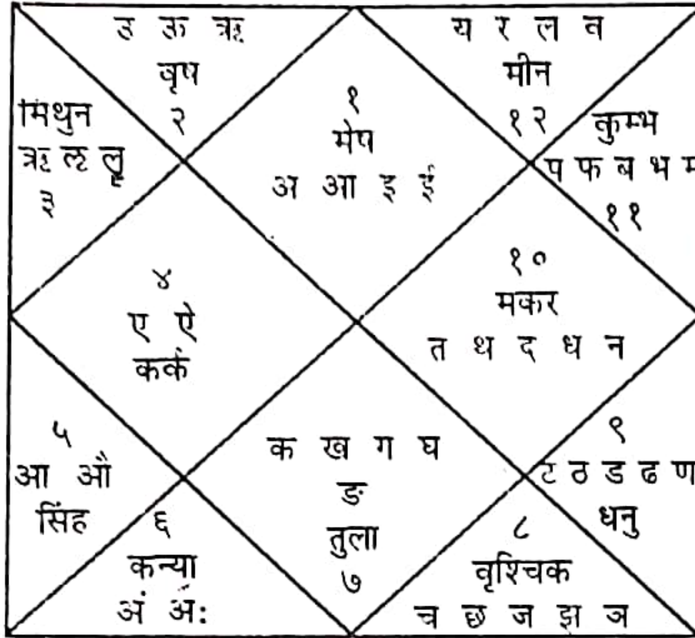
विशेष सुविधाक हेतु उक्त चक्रक फलस्वरूप उक्त प्रकारेँ गणना कए प्रत्येक नामादि वर्णक हेतु शुभ अक्षर (जे मन्त्रक आदिमे भेटैछ) निम्नलिखित चक्रमे देल अछि–

नक्षत्रचक्रक फलस्वरूप चक्र

क्र.	नामादि अक्षर		नक्षत्र	मन्त्रक आदिक अनुकूल अक्षर	क्र.	नामादि अक्षर		नक्षत्र	मन्त्रक आदिक अनुकूल अक्षर
१.	अ आ	क	आश्विन	आ ऐ क द स ह	१४.	ट ठ	क	चित्रा	आ ऐ क द स ह
२.	इ	क	भरणी	श	१५.	ड	क	स्वाती	ऐ श
३.	ई उ ऊ	क	कृत्तिका	आ ऐ क द स ह	१६.	ढ ण	क	विशा.	आ ऐ क द श स ह
४.	ऋ ॠ ऌ ॡ		रोहिणी	श	१७.	त थ द	क	अनरा	ऐ क द श स ह
५.	ए	क	मृगशि	आ ऐ क द श ह	१८.	ध	क	ज्येष्ठा	आ क श स ह
६.	ऐ	क	आर्द्रा	ऐ श	१९.	न प फ	क	मूल	ऐ क द स ह
७.	ओ औ	क	पुनर्वसु	आ क द श स ह	२०.	ब	क	पूर्वाषा	आ श
८.	क	क	पुष्य	ऐ क द श स ह	२१.	भ	क	उत्तराषा	आ ऐ क द स ह
९.	ख ग	क	अश्ले	आ द श स ह	२२.	म	क	श्रवणा	श
१०.	घ ङ	क	मधा	आ ऐ क द स ह	२३.	य र	क	धनिष्ठा	आ ऐ क द स ह
११.	च	क	पूर्वफ.	आ श	२४.	ल	क	शतभि.	ऐ श
१२.	छ ज	क	उत्तरफ.	आ ऐ क द स ह	२५.	व श	क	पूर्वभाद्र	आ ऐ क द श स ह
१३.	झ ञ	क	हस्त	श	२६.	ष स ह	क	उत्पगा	ऐ क द श स ह
					२७.	अं अः क्ष		रेवती	आ क द श

पञ्चम चक्र

राशिचक्र



एहि चक्रमे राशिक संख्याक अनुसार १२ कोष्ठ १-१२ संख्याङ्कित अछि। संख्याक अनुसार प्रतिकोष्ठमे राशि-मेषादि-मीनान्त-लिखित अछि। आओर जाहि अक्षरक जे राशि थिक ताही राशिक कोष्ठमे ओ अक्षर लिखित अछि ।

एहि चक्रमे श, ष, स, ह, क्ष, त्र, ज्ञ एतेक अक्षर नहि अछि । अतएव एतेक अक्षरादि नामक हेतु राशिचक्रक विचार नहि कर्तव्य थिक। तथापि यदि विचार (शतपदचक्रानुसार राशि मानि) कएल जाए तँ कोनो क्षति नहि ।

ई चक्र आगमकल्पद्रुममे वर्णित अछि । ओहिमे कहल गेल अछि–

सूत्रद्वयं पूर्वपरायतञ्च तन्मध्यतो याम्यकुवेरभेदात् ।
एकैकमीशाननिशाचरे तु हुताशवायौ विलिखेत्ततोर्णान् ॥
वेदाऽग्नि-वह्नि-युगल-श्रवणाऽक्षि-संख्यान् । पञ्चेषु-बाण-सर- पञ्च चतुष्टयार्णान् ।
४ ३ ३ २ २ २ ५ ५ ५ ५ ५
मेषाद्यन्तांस्तुगणयेत् सकलांस्तु वर्णन् । कन्यागतां प्रविलिखंदथ साध्य वर्णान् ॥

साध्यवर्ण = 'अं अः' कन्यामे लिखी । अर्थात् पहिल कोष्ठमे (मेषबला कोष्ठमे) ४ अक्षर, द्वितीय कोष्ठमे ३ अक्षर, तृतीयमे ३, चतुर्थमे २, पञ्चममे २, छठममे २, सातममे ५, आठममे ५, नवममे ५, दसममे ५, एगारहममे ५, बारहममे ४ ।

एहि चक्रानुसार विचार-विधि (मार्ग)

नामक आदि अक्षर जाहि कोष्ठमे पड़ए, ताहि कोष्ठसँ मन्त्रक आदि अक्षर जाहि कोष्ठमे पड़ए ततए तक गणना कएला पर मन्त्रक आदि अक्षर यदि ४, ८, १२ स्थानमे पड़ए तँ तदक्षरादि मन्त्र इष्ट नहि । ताहिसँ भिन्न कोष्ठक वर्णादि मन्त्र इष्ट होए । यात्रामे जेना चन्द्रमाक विचार कएल जाइछ तहिना एहि चक्रसँ विचार कर्तव्य ।

एहि चक्रानुसार विचारक परिणामस्वरूप सारिणी

क्र.	नामक आदिवर्ण	तदनुकूल मन्त्रक आदिवर्ण	क्र.	नामक आदिवर्ण	तदनुकूल मन्त्रक आदिवर्ण
१.	'अ आ इ ई' क	आ क द स ह	७.	'क ख ग घ ङ' क	आ ऐ क
२.	'उ ऊ ऋ' क	ऐ क द स ह	८.	'च छ ज झ ञ' क	आ ऐ द श ह
३.	'ऋ ऌ ॡ' क	आ क	९.	ट ठ ड ढ ण क	आ क द श स ह
४.	'ए ऐ' क	आ ऐ द श स ह	१०.	त थ द ध न क	ऐ क द श स ह
५.	'ओ औ' क	आ क द श स ह	११.	प फ ब भ म क	आ ऐ क
६.	'अं अः क'	ऐ क द श स ह	१२.	य र ल व क	आ ऐ द श स ह

षष्ठ चक्र

अकथह चक्र

नामक आदिवर्णयुक्त प्रकोष्ठसँ क्रमश: अग्रिम प्रकोष्ठस्थित वर्ण ओहि नामादि वर्णक हेतु क्रमश: सिद्ध, साध्य, सुसिद्ध तथा अरि होइछ । तकर ज्ञापक ई चक्र थिक; अत: सिद्धादिज्ञापक चक्र कहल जाए सकैछ ।

अ क थ ह १	उ ङ प २	आ ख द ५	ऊ च फ ६
ओ ड व ४	लृ झ म ३	औ ढ श ८	लॄ ञ य ७
ई घ न १३	ॠ ज भ १४	इ ग ध ९	ऋ छ ब १०
अ: त स १६	ऐ ठ ल १५	अं ण ष १२	ए ट र ११

(बृहत् कोष्ठ: १ — ऊपर बाम, २ — ऊपर दहिन, ३ — नीचाँ दहिन, ४ — नीचाँ बाम)

विश्वसारग्रन्थोक्त अकथहचक्रोद्धार-वचन

मन्त्राद्यक्षरपर्यन्तं चक्रे सिद्धादिके क्रमात् । जन्मर्क्षोत्थं प्रसिद्धं वा नाम ग्राह्यं विशोधने ।।
उर्ध्वगा: पञ्च रेखा: स्यु: पञ्च तिर्यग्गता: पुन: । कोष्ठानि तत्र जायन्ते षोड़शैवात्रसं लिखेत् ।।
कोष्ठेषु मातृकावर्णोस्तत्र नामादित: क्रमान् । सिद्ध: साध्य: सुसिद्धोऽरि शोयौ मन्त्राक्षरावधि : ।।

अकारादिहकारान्तं मूलकोष्ठादित: सुधी: । दक्षिणावर्तयोगेन कोष्ठे वर्णोल्लिखेत्सुधी: ।।
येनैव लिखनं कुर्यात् तेनैव गणनं स्मृतम्-इति विश्वसारे ।।

उक्त चक्रमे बृहत्-बृहत् चारि कोष्ठ अछि । प्रत्येक बृहत् कोष्ठक मध्यमे (दक्षिणावर्तक्रमेँ) संख्या (१, २, ३, ४) लिखल अछि । पुन: एहि चारू कोष्ठक भीतर चारि-चारि कोष्ठ अछि । योगसँ ४ x ४ = १६ कोष्ठ भेल ।

प्रत्येक बृहत् कोष्ठान्तर्गत लघु कोष्ठचतुष्टयक अङ्क लिखित अछि आओर अङ्कलेखन-क्रमानुसार प्रत्येक कोष्ठमे मातृकावर्ण क्रमश: लिखित अछि– अ सँ ह पर्यन्त ४९ वर्ण । एहि चक्रमे क्ष त्र ज्ञ ई तीनि अक्षर नहि अछि । अत: एहि अक्षरादि नामक हेतु अ क थ ह चक्रक विचार नहि होइछ । उक्त तीनू अक्षरकेँ क्रमश: ककारादि तकारादि तथा जकारादि मानि विचार करबाक परम्परा अछि । विचार कएने नीक छोड़ि अधलाह नहिं । आओर विचार नहियोँ कएने कोनो क्षति नहि ।

सरलीकृत अकथह चक्र

पूर्वमे जे अकथह चक्र देल अछि से शास्त्रीय रीतिसँ । एकरा दू चक्रमे बाँटि एतए सरल बनाओल गेल अछि । पहिने चारि कोष्ठवाला पहिल चक्र देखि ज्ञात करी जे मन्त्र कोहन अछि-- सिद्ध, साध्य, सुसिद्ध कि अरि । तखन द्वितीय सोलह कोष्ठवाला चक्र देखि ओहिना निर्धारित करी जे मन्त्र कोन प्रकारमे आएल । दुनू फलकेँ जोड़ि ज्ञात होएत जे उपर्युक्त सोलह भेदमे प्रस्तुत मन्त्र कोन प्रकारक थिक ।

चक्र-१

अ क थ ह उ ङ प ओ ड व लृ झ म १	२ आ ख द ऊ च फ औ ढ श ऌ ञ य
४ ई ध न ॠ ज भ अः त स ऐ ठ ल	३ इ ग ध ऋ छ ब ए ढ र अं ण प

चक्र-२

अ क थ ह १	उ ङ प २	आ ख द ५	ऊ च फ ६
४ ओ ड व	३ लृ झ म	८ औ ढ़ श	७ ऌ ञ य
ई घ न १३	ॠ ज भ १४	इ ग ध ९	ऋ छ ब १०
१६ अः त स	१५ ऐ ठ ल	१२ अं ण प	११ ए ढ र

अकथह चक्रमे कोष्ठविन्यासक्रम, वर्ण विन्यासक्रम तथा गणनाक क्रम समाने अछि । अर्थात् दक्षिणावर्त अछि । यथा–

वर्णविन्यासक्रम

वृहत् प्रथम कोष्टक प्रथम कोष्ठसँ आरम्भ कए चारू बृहत् कोष्ठक अन्तर्गत:

लघु प्रथम	कोष्ठचतुष्टयमे	क्रमशः	'अ, आ, इ, ई,' ई	चारि वर्ण	–	प्रथम	आवृत्ति मे
लघु द्वितीय	''	''	'' 'उ ऊ ऋ ॠ' ई	''	–	द्वितीय	''
लघु तृतीय	''	''	'' 'ऌ ल ए ऐ' ई	''	–	तृतीय	''
लघु चतुर्थ	''	''	'' 'ओ औ अं अः' ई	''	–	चतुर्थ	''

एवम् १२ आवृत्तिमे (१२ × ४ = ४८) ४८ वर्णक तथा १३ म आवृत्तिमे मात्र 'ह' एहि

केवल प्रथम बृहत् कोष्ठक प्रथम लघु कोष्ठमे चारि वर्ण (अ क थ ह) क विन्यास होइछ तथा अन्य पन्द्रह कोष्ठमे केवल तीनि-तीनि वर्णक विन्यास होइछ ।

एही प्रथम लघु कोष्ठक चारि अक्षर (अ क थ ह) क आधार पर एहि चक्रक नाम अकथह चक्र राखल गेल अछि । दोसर शब्दमे एहि चक्रकेँ 'सिद्धादिज्ञापक' चक्र कहबाक थिक । अर्थात् ''सिद्ध, साध्य, सुसिद्ध, अरि ज्ञापक'' चक्र ।

सिद्ध, साध्य, सुसिद्ध, अरि ज्ञापक विधि

एहि चक्रसँ दू प्रकारेँ सिद्ध, साध्य, सुसिद्ध, अरि जानल जाइत अछि-- (१) चारि बृहत् कोष्ठक आधार पर, तथा (२) सोलह लघु कोष्ठक आधार पर । पहिने बृहत् कोष्ठमे नामक आदि अक्षर ताको ओहि कोष्ठक सभ अक्षर सिद्ध बूझल जाए । ततएसँ दक्षिणावर्त क्रमेँ अगिला कोष्ठक सभ अक्षर साध्य मानल जाए, ताहिसँ अगिला (अर्थात् तेसर) कोष्ठक अक्षर सभ सुसिद्ध बूझल जाए आ ताहिसँ अगिला कोष्ठक अक्षर सभ अरि बूझल जाए । उदाहरण, देवदत्त नामक व्यक्तिक हेतु ऐकारादि मन्त्र सुसिद्ध भेल, किएक तँ द अक्षर द्वितीय बृहत् कोष्ठमे अछि, ओ ओतएसँ ऐ तेसर स्थानमे पड़ैत अछि । पहिल स्थान सिद्ध, दोसर साध्य, तेसर सुसिद्ध थिक से कहि चुकल छी । तदनुसार--

(क) बृहत् कोष्ठचतुष्टयक अनुसार गणनासँ

प्रथम बृहत् कोष्ठस्थ वर्णक अरि होइछ चतुर्थ बृहत् कोष्ठक वर्ण ।
द्वितीय '' '' '' '' प्रथम '' '' ''
तृतीय '' '' '' '' द्वितीय '' '' ''
चतुर्थ '' '' '' '' तृतीय '' '' ''

एहिना सोलह लघु कोष्ठ सभमे पहिने नामक आदि अक्षर ताकी । एहि कोष्ठक सभ अक्षर सिद्ध बूझल जाए । दक्षिणावर्तक्रमेँताहिसँ अगिला साध्य, पुनः ताहिसँ अगिला सुसिद्ध आ ताहूसँ अगिला (अर्थात् चारिम स्थानक वर्ण सभ) अरि बूझल जाए । तदनुसार--

(ख) लघु कोष्ठ सोलहक अनुसार गणनासँ--

बृहत् प्रथम कोष्ठगत लघु प्रथम कोष्ठस्थ वर्ण (अकथ) क अरि (शत्रु) होइछ--
(२) '' '' '' लघु चतुर्थ '' वर्ण (ओडव) । बृ.प्र. कोष्ठगतक अनुसार
(३) '' द्वितीय '' लघु अष्टम '' '' औढश । बृ.द्वि. '' ''
(४) '' तृतीय '' लघु बारहम '' '' अंणप । बृ.तृ. '' ''
(४) '' चतुर्थ लघु सोलहम '' '' अःतस । बृ.च. '' ''

उक्त 'अकथह' चक्रक परिणाम स्वरूप फल प्रदर्शन, सुविधाक हेतु विस्तार पूर्वक कएल जाइछ--

कोनहु नामक आदि अक्षरक हेतु, कोनहु मन्त्रक आदि अक्षर ''सिद्ध-साध्य-सुसिद्ध-अरि'' होइछ ई कहि चुकल छी । एकर गणना दुइ प्रकारेँ भेलासँ एकर भेद १६ होइछ । यथा--

(१) सिद्ध-सिद्ध, (२) सिद्ध-साध्य, (३) सिद्ध-सुसिद्ध तथा (४) सिद्ध-अरि
(५) साध्य-सिद्ध, (६) साध्य-साध्य, (७) साध्य-सुसिद्ध (८) साध्य-अरि
(९) सुसिद्ध-सिद्ध, (१०) सुसिद्ध-साध्य, (११) सुसिद्ध-सुसिद्ध, (१२) सुसिद्ध-अरि
(१३) अरि-सिद्ध, (१४) अरि-साध्य, (१५) अरि-सुसिद्ध, (१६) अरि-अरि

अकथह चक्रक विचारसँ इएह बुझल जाइछ । अरियुक्त वर्णादि मन्त्र ग्राह्य नहि ई कहि चुकल छी । किन्तु ग्राह्य मन्त्रमे अनुकूलताक मात्राक सम्बन्धमे कहल जाइछ-- १६ मे ७ टा अरिसँ युक्त अछि । अवशिष्ट ९ मे अधिक अनुकूलताक्रमेँ लिखल जाइछ--

(१) साध्य-साध्य; (२) (३) साध्य-सिद्ध, सिद्ध-साध्य ;
(४) (५) साध्य-सुसिद्ध, सुसिद्ध साध्य; (६) सिद्ध-सिद्ध;
(७) (८) सिद्ध-सुसिद्ध-सुसिद्ध-सिद्ध; (९) सुसिद्ध-सुसिद्ध अक्षरादि मन्त्र क्रमशः अधिक अनुकूल होइछ ।

विशेष सुविधाक हेतु प्रत्येक नामादि वर्णक हेतु अनुकुल मन्त्रादिवर्ण निम्न सारिणीसँ ज्ञातव्य

एहि वर्णादि नामक हेतु	एहि वर्णादि मन्त्र अनुकूल होय	एहि वर्णादि नामक हेतु	एहिवर्णादि मन्त्र अनुकूल होए
(१)	(२)	(१)	(२)
अ क थ ह	आ क द ह	इ ग ध	ऐ क ह
उ ड. प	श	ऋ छ ब	ऐ स
ऌ झ म	आ क द श ह	ए ट र	ऐ क स ह
ओ ड व	आ क द श ह	अं ण ष	क स ह
आ ख द	आ ऐ द	ई घ न	आ ऐ क द ह
ऊ च फ	ऐ श स	ॠ ज भ	आ ऐ क द श स ह
ॡ ञ य	आ ऐ द श स	ऐ ठ ल	ऐ श स
औ ढ श	आ द श स	अः त स	आ क द श स ह

सप्तम चक्र

अकडम चक्र

(१२) अः ठ भ
अं ट व (११)
(१) अ क ड म
(२) आ ख ढ य
इ ग ण र (३)
ओ ञ फ (१०)
(४) ई ळ त घ
(९) ओ ह झ प
ए स ज न (८)
(७) अ क ड म
( ) उ व थ ड
ऊ [illegible] द च (६)

एहि चक्रमे १ सँ १२ संख्यायुत १२ कोष्ठ अछि । संख्याङ्कितक्रमसँ गणना करी । प्रथम कोष्ठक वर्ण पर चक्रक नाम अछि ।

नामादि वर्ण जाहि कोष्ठमे पड़ए ततएसँ मन्त्रादि वर्ण कोष्ठ तक गणना करी ।

छठम, आठम तथा बारहम कोष्ठगत वर्ण त्याज्य थिक, शेष वर्ण ग्राह्य थिक । अतः तदादि मन्त्र इष्ट होए । एहि चक्रक अनुसार कोन नामादि वर्णक अनुकूल कोन मन्त्रादि वर्ण होइछ तकर विचार

'अ क ड म' एहि चारि वर्णक अनुकूल – 'आ क ह' ई तीनि वर्ण होइछ ।
'आ ख ढ य' " " – 'आ ऐ द श' ई चारि वर्ण होइछ ।
'इ ग ण र' " " – 'क द श ह' " "
'ई घ त ल' " " – 'आ ऐ क द श स' ई ६ वर्ण"

'ऊ च द श'	''	''	– 'आ ऐ द श ल ह' ई ६ वर्ण ''
'ऊ ङ थ व'	''	''	– 'आ ऐ क द श स ह' ई ७ वर्ण ''
'ए छ ध ष'	''	''	– 'आ ऐ क स ह' ई ५ वर्ण छोड़ि
'ऐ ज न स'	''	''	– 'आ ऐ द श स ह' ई ६ वर्ण ''
'ओ झ प ह'	''	''	– 'क द श ह' ई चारि वर्ण ''
'औ ञ फ' एहि तीनि वर्णक		''	– 'आ ऐ क द श स' ई ६ वर्ण''
'अं ढ ब'	''	''	– 'आ ऐ क स ह' ई ५ वर्ण ''
'अः ठ भ'	''	''	– 'आ ऐ क द श स ह' ई ६ वर्ण ''

सरलीकृत सारिणी

नामाद्यक्षर तथा नामाङ्क ज्ञानसँ इष्ट मन्त्रक ज्ञान

पूर्वमे कहि चुकल छी जे सारिणी द्वारा बिनुश्रमेँ अल्पसँ अल्प समयमे इष्ट मन्त्रक चयन कएल जाए सकैत अछि। प्रस्तुत सारिणी ताही हेतु देल गेल अछि। केवल नामाङ्क चक्र द्वारा जनबाक होएत (जे प्रथम चक्रमे पृष्ठ ५ पर वर्णित अछि)। स्तम्भ एकमे नामक आदि वर्ण ताकू आ स्तम्भ दु मे नामाङ्क ताकू। ओहि नामाङ्कक सामने स्तम्भ तीनमे जे मन्त्र अछि तकरा ओहि नामक व्यक्तिक हेतु इष्ट बूझू।

नामक आदि वर्ण	नामाङ्क	इष्ट मन्त्र	मन्त्राङ्क	मन्त्र-देवता	[illegible]
१	२	३	४	५	६
अ	१-७	क्रीँ	७	काली	६
''	१-४	ह्रीँ	४	भुवने.	६
''	८	ह्रीँ क्रीँ	३	काली	६
आ	१-४	ऐँ	४	बाला	५
''	१-७	आँ हुँ	७	छि. म.	६
''	८	ह्रीँ क्रीँ	३	काली	४
इ	१-७	क्रीँ	७	काली	५
''	८	ह्रीँ क्रीँ	३	काली	५
''	१-४	ऐँ	४	बाला	५
ई	१-७	क्रीँ	७	काली	५
''	८	ह्रीँ क्रीँ	३	काली	५
''	१-४	ऐँ	४	बाला	५
उ	१	श्रीँ	१	लक्ष्मी	५
''	१-४	स्त्रीँ	४	भुवने.	५
''	८	ह्रीँ क्रीँ	३	काली	५
ऊ	१	श्रीँ	१	लक्ष्मी	५
''	१-४	स्त्रीँ	४	तार	
६					
''	८	ह्रीँ क्रीँ	३	काली	५
ऋ	१	श्रीँ	१	लक्ष्मी	५
''	१-४	स्त्रीँ	४	तारा	५
''	८	ह्रीँ क्रीँ	३	काली	४
ए ऐ	१-४	ह्रीँ	४	भुवने.	६
''	१-७	क्रीँ	७	काली	५
''	८	ह्रीँ क्रीँ	३	काली	६
ओ	१-४	ह्रीँ	४	भुवने.	६
''	१-७	ह्रीँ क्रीँ ह्री	७	काली	६
''	८	ह्रीँ क्रीँ	३	काली	६
औ	१	श्रीँ	१	लक्ष्मी	६
''	१-४	स्त्रीँ	४	तारा	६
''	५-६	श्रीँ स्त्रीँ श्री	६	तारा	६
''	७	स्त्रीँ दुँ	६	दुर्गा	५

एहिमे सर्वत्र ८ नामाङ्कवालाक मन्त्र द्वितीय विधिसँ विहित अछि। आ. टो. २ – पृ.सं. २२ तथा २३ मे रातव्य।

१	२	३	४	५	६
"	८	श्रीं क्रीं	८	काली	६
क	१-७	क्रीँ	७	काली	५
"	८	ह्रीँ क्रीँ	३	काली	६
ख	१-४	ऐँ	४	बाला	४
"	१-७	क्रीँ	७	काली	३
"	८	ह्रीँ क्रीँ	३	काली	४
ग	१-४	ह्रीं	४	भुवने.	५
"	१-७	क्रीँ	७	काली	३
"	८	ह्रीँ क्रीँ	३	काली	५
घ	१-२	दुँ	२	दुर्गा	४
"	१-४	ऐँ	४	बाला	५
"	१-७	क्रीँ	७	काली	७
"	१-७	ऐँ क्रीँ ऐँ	७	काली	५
"	८	ह्रीँ क्रीँ	३	काली	४
"	१-७	आँ हुँ	७	छिन्नम	४
च	१	श्रीँ	५	लक्ष्मी	५
"	१-४	ऐँ	४	बाला	५
"	१-७	ऐँ क्रीँ ऐँ	७	काली	५
"	८	ह्रीँ क्रीँ	३	काली	५
छ	१-४	ऐँ	४	बाला	६
"	१-७	ऐँ क्रीँ ऐँ	७	काली	६
"	१-७	क्रीँ	७	काली	४
"	८	ह्रीँ क्रीँ	३	काली	४
ज	१	श्रीँ	१	लक्ष्मी	६
"	१-२	दुँ	२	दुर्गा	५
"	१-४	ऐँ	४	बाला	५
"	१-७	ऐँ क्रीँ ऐँ	७	काली	५
"	८	ह्रीँ क्रीँ	३	काली	५

१	२	३	४	५	६
झ	१	श्रीँ	१	लक्ष्मी	६
"	१-२	दुँ	२	दुर्गा	५
झ	१-४	ह्रीँ	४	भुवने.	४
"	१-६	ह्रीँ दुँ	६	दुर्गा	५
"	८	ह्रीँ क्रीँ	३	काली	४
ट	१-४	ह्रीँ	४	भुवने	६
"	१-७	क्रीँ	७	काली	५
"	८	ह्रीँ क्रीँ	३	काली	६
ठ	१-७	क्रीँ	७	काली	५
"	१-४	ऐँ	४	बाला	५
"	१-४	ह्रीँ	४	भुवने	६
"	८	ह्रीँ क्रीँ	३	काली	६
"	१-७	आँ हुँ	७	छि.म.	५
ड	१-४	ह्रीँ	४	भुवने	६
"	१-७	क्रीँ	७	काली	४
"	१	श्रीँ	१	लक्ष्मी	६
"	८	ह्रीँ क्रीँ	३	काली	६
ढ	१	श्रीँ	१	लक्ष्मी	६
"	१-२	दुँ	२	दुर्गा	५
"	१-६	ह्रीँ दुँ	६	दुर्गा	४
"	७	ऐँ क्रीँ ऐँ	७	काली	५
"	८	ह्रीँ क्रीँ	३	काली	४
[illegible]	१	श्रीँ	१	लक्ष्मी	६
"	१-४	ऐँ	४	बाला	६
"	१-७	क्रीँ	७	काली	५
"	१-७	आँ हुँ	७	छि.म	४
"	८	ह्रीँ क्रीँ	३	काली	५

१	२	३	४	५	६
थ	१-४	ह्रीं	४	भुवने.	६
,,	१-७	क्रीं	७	काली	५
,,	८	ह्रीं क्रीं	३	काली	६
द	१	श्रीं	१	लक्ष्मी	५
,,	१-२	दुं	२	दुर्गा	६
,,	१-४	ह्रीं	४	भुवने	५
,,	१-४	ऐं	१	बाला	५
,,	५-७	क्रीं	७	काली	५
,,	८	ह्रीं क्रीं	३	काली	५
ध	१-४	ह्रीं	४	भुवने	५
,,	१-७	क्रीं	७	काली	४
,,	८ .	ह्रीं क्रीं		काली	५
न	१-२	दुं	२	दुर्गा	५
,,	१-४	ऐं	४	बाला	६
,,	१-६	ऐं दुं	६	दुर्गा	५
,,	१-७	ऐं क्रीं ऐं	७	काली	५
,,	८	ह्रीं क्रीं	३	काली	५
,,	१-७	क्रीं	७	काली	४
प	१-७	क्रीं	७	काली	४
,,	८	ह्रीं क्रीं	३	काली	४
फ	१	श्रीं	१	लक्ष्मी	४
,,	१-४	ऐं	४	बाला	६
,,	१-७	क्रीं	७	काली	४
ब	१-४	स्त्रीं	४	तारा	४
,,	१-६	स्त्रीं दुं	६	दुर्गा	५
,,	१-७	क्रीं	७	काली	२
,,	१-७	ऐं क्रीं ऐं	६	काली	४
,,	८	ह्रीं क्रीं	३	काली	४
भ	१-४	स्त्रीं	४	तारा	५
,,	१-६	स्त्रीं दुं	६	दुर्गा	६
,,	१-७	ऐं क्रीं ऐं	७	काली	५
,,	८	ह्रीं क्रीं	३	काली	४

१	२	३	४	५	६
म	१-७	क्रीं	७	काली	८
,,	८	ह्रीं क्रीं	३	काली	८
य	१-४	ऐं	४	बाला	६
,,	१-७	ऐं क्रीं ऐं	७	काली	६
,,	८	ह्रीं क्रीं	३	काली	४
र	१-४	ह्रीं	४	भुवने	६
,,	१-७	क्रीं	७	काली	४
,,	८	ह्रीं क्रीं	३	काली।	६
ल	१-२	दुं	२	दुर्गा	४
,,	१-४	स्त्रीं	४	तारा	४
,,	६	ऐं क्रीं ऐं	७	काली	६
,,	७	ऐं क्रीं ऐं	७	काली	६
,,	८	ह्रीं क्रीं	३	काली	६
व	१-४	ह्रीं	४	भुवने	६
,,	१-६	ह्रीं दुं	६	दुर्गा	६
,,	१-७	क्रीं	७	काली	४
,,	८	ह्रीं क्रीं	३	काली	६
श	१	क्रीं	१	लक्ष्मी	६
,,	१-२	दुं	२	दुर्गा	६
,,	१-४	स्त्रीं	४	तारा	६
,,	१-७	क्रीं	७	काली	४
,,	८	ह्रीं क्रीं	३	काली	६
ष	१-४	ह्रीं	४	भुवने	६
,,	१-७	क्रीं	७	काली	६
,,	८	ह्रीं क्रीं	३	काली	६
स	१	श्रीं	१	लक्ष्मी	५
,,	१-४	स्त्रीं	४	तारा	५
,,	१-६	स्त्रीं दुं	६	दुर्गा	५
,,	१-७	क्रीं	७	काली	५
,,	८	ह्रीं क्रीं	३	काली	६
ह	१-४	ह्रीं	४	भुवने	६
,,	१-७	क्रीं	७	काली	६
,,	८	ह्रीं क्रीं	३	काली	६

ध्यान

दशमहाविद्याक तथा दुर्गा सरस्वती अन्नपूर्णाक

(१) दक्षिणकालिकाक ध्यान

शवारूढां महाभीमां घोरदंष्ट्रां हसन्मुखीम् ।
चतुर्भुजां खड्गमुण्डवराभय-करां शिवाम् ।
मुण्डमालाधरां देवीं ललज्जिह्वां दिगम्बराम् ।
एवं सञ्चिन्तयेत् कालीं श्मशानालय-वासिनीम् ।

(2) उग्रताराक ध्यान

प्रत्यालीढ-पदार्पिताङ्घ्रि शव-हृद्घोराट्टहासापरा,
खड्गेन्दीवरकर्त्रिखर्परभुजाहुँङ्कारबीजोद्भवा ।
खर्वा नील- विशालपिङ्गलजटाजूटैकनागैर्युता,
जाड्यँन्यस्य कपालकर्तृजगतां हन्त्युग्रतारा स्वयम् ॥

(३) षोडशीक (बालाक) ध्यान

बालार्क-मञ्जुलाभासां, चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम् ।
पाशाङ्कुशशराँश्चापं धारयन्तीं शिवां भजे ॥

(४) भुवनेश्वरीक ध्यान

उद्यदिनद्युतिमिन्दु-किरीटां तुङ्गकुचां नयनत्रययुक्ताम् ।
स्मेरमुखीं वरदाङ्कुश-पाशा-भीति-करां प्रभजे भुवनेशीम् ॥

(५) छिन्नमस्ताक ध्यान

प्रत्यालीढपदां सदैव दधतीं छिन्नं शिरः कर्तृकां,
दिग्वस्त्रां स्वकबन्धशोणितसुधाधारां पिबन्तीं मुदा,
नागाबद्ध-शिरोमणिं त्रिनयनां हृद्युत्पलालंकृतां,
रत्यासक्तमनोभवोपरिदृढां ध्यायेज्जवासन्निभाम् ॥
दक्षे चातिसिता विमुक्तचिकुरा कर्त्री तथा खर्परं,
हस्ताभ्यान्दधती रजोगुणभवा नाम्नापि सावर्णिनी ।
देव्याश्छिन्नकबन्धतःपतदसृग्धारां पिबन्ती मुदा
नागाबद्धशिरोमणिर्मनुविदा ध्येया सदासा सुरैः ।
प्रत्यालीढ-पदा कबन्धविगलद्रक्तं पिबन्ती मुदा,
सैषा या प्रलये समस्तभुवनं भोक्तुं क्षमा तामसी ।

शक्तिः सापि परात्परा भगवती नाम्नापरा डाकिनी
ध्येया ध्यानपरैः सदा सविनयं भक्तेष्टभूतिप्रदा ॥

(६) त्रिपुरभैरवीक ध्यान

उद्यद्भानुसहस्र कान्तिमरुणक्षौमां शिरोमालिकां
रक्तालिप्तपयोधरां जपवटीं विद्यामभीतिं वराम् ।
हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्रविलसद्वक्त्रारविन्दश्रियं
देवीं बद्धहिमांशुरत्नमुकुटां वन्दे समन्दस्मिताम् ॥

(७) धूमावतीक ध्यान

विवर्णा चञ्चला दुष्टा दीर्घा च मलिनाम्बरा ।
विमुक्तकुन्तला रूक्षा विधवा विरलद्विजा ॥
काकध्वजरथारूढ़ा विलम्बितपयोधरा ।
शूर्पहस्ताऽतिरूक्षाक्षा धूतहस्ता वरान्विता ॥
प्रबृद्धघोणा तु मृशं कुटिला कुटिलेक्षणा ।
क्षुत्पिपासार्दिता नित्यं भयदा कलहास्पदा ॥

(८) बगलामुखीक ध्यान

मध्ये सुधाब्धिमणिमण्डपरत्नवेदी-
सिंहासनोपरिगतां परिपीतवर्णाम् ।
पीताम्बराभरण- माल्य- विभूषिताङ्गीं
देवीं स्मरामि धृत-मुद्गरवैरि-जिह्वाम् ॥
जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं वामेन शत्रून् परिपीड़यन्तीम् ।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि ॥

(९) मातङ्गीक (नीलसरस्वतीक) ध्यान

श्यामाङ्गीं शशिशेखरां त्रिनयनां रत्नसिंहासनस्थिताम् ।
वेदवाददण्डैरसि-खेटकपाशाङ्कुशधराम् ॥

(१०) कमलाक (लक्ष्मीक) ध्यान

कान्त्या काञ्चनसन्निभां हिमगिरिप्रख्यै श्चतुर्भिर्गजै
र्हस्तोत्क्षिप्तहिरण्मयामृतघटैरासिच्यमानां श्रियम् ।
बिभ्राणां वरमब्जयुग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलां,
क्षौमाबद्धनितम्बबिम्बवलितां वन्देऽरविन्दस्थिताम् ॥

दुर्गाक ध्यान

कालाभ्राभां कटाक्षैररिकुलभयदां मौलिबद्धेन्दुरेखां,
शङ्खं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम् ।
सिंहस्कन्धाधिरूढ़ां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं
ध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिदश-परिवृतां सेवितां सिद्धकामैः ॥

सरस्वतीक ध्यान

शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम् ।
हस्ते स्फाटिक- मालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ॥

अन्नपूर्णाक ध्यान

तप्तस्वर्णनिभा शशाङ्कमुकुटा रत्नप्रभाभासुरा,
नानावस्त्र-विराजिता त्रिनयना भूमी रमाभ्यां युता ।
दर्वी हाटकभाजनञ्च दधती रम्योच्चपीनस्तनी,
नृत्यन्तं शिवमाकलय्य मुदिता ध्येयान्नपूर्णेश्वरी ॥

ऋणधन चक्र

विश्वसारे ऋणधनचक्रोद्धारवचनम्-

अथर्णधनसंशुद्धिः कथ्यते सिद्धिदायिनी ।
सप्ततिर्यग् लिखेद्रेखा द्वादशैवोर्ध्वगाः पुनः ॥
एवं कृते तु जायन्ते कोष्ठाः षट्षष्टिसम्मिताः ॥
आदिपंक्तौ लिखेदङ्कांस्ते कथ्यन्ते यथाक्रमम् ।
मनु नक्षत्र नेत्रा र्क तिथि षड् वेद
बह्नयः।
७ २७ २ १ १५ ६ ४ ३
३
सायका बसबो नन्दाः कोष्ठेषु क्रमतः स्थिताः ॥
८ ८ ११
द्वितीयपंक्तौ संलेख्याः प श्च दीर्घोज्झिताः स्वराः ॥
तृतीयपंक्तौ काद्यर्णाष्टकारान्ताः शिवैर्भृताः ।
ठादिफान्ता श्चतुर्थ्यान्तु प श्चम्यां वादिहान्तिकाः ॥
षष्ट्यां पंक्तौ क्रमाल्लेख्या अङ्काः कथ्यन्त एव ते ।
दिक् चक्र मुनि वेदा ष्ट गुण सप्ते षु सागराः ॥
१० १ ७ ४ ८ ३ ७ ५ ४
४
रसाश्च रामसंख्यास्ता एवमङ्का उदीरिताः ॥
६ ३
मन्त्रवर्णान् पृथक् कुर्यात् स्वरव्यञ्जनरूपतः ।
कोष्ठे यावति वर्णः स्याद् गुणयेत्तावदङ्ककम् ।
कोष्ठोपरिस्थेनाङ्केन सर्ववर्णेष्वयं विधिः ॥
दीर्घाक्षराणामङ्कास्तु ज्ञेया लघ्व क्षरस्थिताः ।
एकीकृत्याखिलानङ्कानष्टभिर्विभजेत् पुनः ॥
शेषाङ्को मन्त्रराशिः स्यान्नामवर्णेष्वयं विधिः ॥



पं० माधव झा

जन्म : १९२९ ई० ।

पिता : महावैयाकरण दीनबन्धु झा

निवास : गाम इसहपुर-रामनगर, डाकघर सनकोथु, जिला मधुबनी

गुरु : पं० मधुसूदन मिश्र (माध्यमिक); पं० दीनबन्धु झा (व्याकरण); पं० जगदीश मिश्र ओ पं० रूपनाथ झा (दर्शन) ।

शिक्षा : लक्ष्मीवती-विद्यालय, सरिसब; विक्रमशिला संस्कृत महाविद्यालय, सुलतानगंज; मिथिला संस्कृत विद्यापीठ, दरभङ्गा ।

उपाधि : व्याकरणाचार्य; विद्यावारिधि (पी. एच. डी.), शोधविषय लघुशब्देन्दुशेखरस्य समीक्षात्मकम् अध्ययनम् ।

अध्ययन : व्याकरण, ज्योतिष, धर्मशास्त्र, दर्शन ।

अध्यापन : नन्दन संस्कृत महाविद्यालय, इसहपुर-रामनगरमे प्राध्यापक (१९६५-७७ ई०); प्रधानाचार्य (१९७८-८७ ई०) ।

कृति : (१) दीक्षा (कर्मकाण्ड), प्रकाशित ।

(२) भागवत नाटक, मैथिली अनुवाद, मूल लेखक अम्बिका दत्त व्यास ।

(३) गयापद्धति, हिन्दीमे, यन्त्रस्थ ।

(४) भण्डार (ज्योतिष-धर्मशास्त्र-कर्मकाण्ड) ।

(५) पर्वनिर्णयतत्त्व (धर्मशास्त्र) ।